Information of Press Council of Maharashtra

ISSN NO. (Online/E-Journal): 3139-499X | Vol. 1 | Issue 3, July to September 2026

Article 3 | Language: Hindi | Published: July to September 2026

ISSN: वैश्विक पहचान, विश्वसनीयता और डिजिटल प्रकाशन का आधार

Najakat Shoukat Sayyed

ABSTRACT

प्रस्तुत लेख में International Standard Serial Number (ISSN) प्रणाली की संरचना, कार्यप्रणाली तथा आधुनिक प्रकाशन जगत में उसके महत्व का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। डिजिटल युग में तीव्र गति से बढ़ती सूचना और ऑनलाइन प्रकाशनों की संख्या के बीच किसी भी जर्नल या मैगज़ीन की पहचान, विश्वसनीयता और प्रमाणिकता सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। इस संदर्भ में ISSN एक मानकीकृत वैश्विक पहचान प्रदान करने वाली महत्वपूर्ण प्रणाली के रूप में उभरकर सामने आती है।

लेख में ISSN की 8 अंकों की संरचना, "चेक डिजिट" की भूमिका, तथा प्रिंट एवं ऑनलाइन संस्करणों के लिए अलग-अलग ISSN प्रदान करने की प्रक्रिया का विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही, पेरिस स्थित अंतरराष्ट्रीय ISSN केंद्र तथा भारत में कार्यरत ISSN राष्ट्रीय केंद्र की भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है, जो प्रकाशनों को वैश्विक डेटाबेस में पंजीकृत कर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करते हैं।

ISSN प्राप्त करने की पात्रता, आवश्यक दस्तावेज तथा आवेदन प्रक्रिया का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि यह प्रणाली पारदर्शिता एवं प्रमाणिकता पर आधारित है। लेख में यह भी उल्लेख किया गया है कि ISSN प्राप्त होने से किसी प्रकाशन को अंतरराष्ट्रीय मान्यता, इंडेक्सिंग की सुविधा, शोध क्षेत्र में स्वीकार्यता तथा पेशेवर विश्वसनीयता प्राप्त होती है।

डिजिटल मीडिया के विस्तार के साथ ISSN की उपयोगिता और भी बढ़ गई है, विशेष रूप से ऑनलाइन जर्नल्स के लिए, जहाँ यह सर्च इंजन दृश्यता, वैश्विक पहुँच और अकादमिक पहचान को सुदृढ़ करता है।

"Information of Press Council of Maharashtra" ई-जर्नल के उदाहरण के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि ISSN पंजीकरण किसी प्रकाशन की प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता को किस प्रकार सुदृढ़ करता है।

अंततः, यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है कि ISSN केवल एक संख्या नहीं, बल्कि प्रकाशन की गुणवत्ता, निरंतरता और अंतरराष्ट्रीय पहचान का सशक्त प्रतीक है।

ISSN: वैश्विक पहचान, विश्वसनीयता और डिजिटल प्रकाशन का आधार
एक विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक फीचर आर्टिकल

परिचय: बदलते मीडिया परिदृश्य में पहचान की आवश्यकता

वर्तमान युग सूचना, संचार और डिजिटल विस्तार का युग है, जहाँ समाचार, विचार, शोध और विश्लेषण पहले से कहीं अधिक तेजी से प्रसारित हो रहे हैं। प्रिंट मीडिया के साथ-साथ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, ई-जर्नल्स, डिजिटल मैगज़ीन और वेब-आधारित प्रकाशनों का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। ऐसे प्रतिस्पर्धात्मक और विशाल सूचना संसार में किसी भी प्रकाशन की पहचान, विश्वसनीयता और प्रमाणिकता स्थापित करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। यदि किसी प्रकाशन की स्पष्ट और मान्यता प्राप्त पहचान नहीं है, तो उसकी सामग्री की प्रामाणिकता पर प्रश्नचिह्न लग सकता है। इसी चुनौती का समाधान प्रदान करने के लिए **International Standard Serial Number (ISSN)** प्रणाली विकसित की गई।

ISSN न केवल एक तकनीकी पहचान संख्या है, बल्कि यह प्रकाशन की विश्वसनीयता, निरंतरता और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी उपस्थिति का प्रमाण भी है। यह प्रणाली प्रकाशनों को एक मानकीकृत पहचान देती है, जिससे उन्हें वैश्विक स्तर पर पहचान मिलती है और उनका रिकॉर्ड व्यवस्थित रूप से संरक्षित किया जा सकता है। विशेष रूप से डिजिटल युग में, जहाँ हजारों ऑनलाइन जर्नल्स प्रतिदिन शुरू हो रहे हैं, ISSN एक ऐसा माध्यम बन गया है जो गुणवत्ता और प्रमाणिकता को सुनिश्चित करता है।

ISSN की अवधारणा और संरचना का विस्तृत विश्लेषण

ISSN (International Standard Serial Number) एक 8 अंकों की विशिष्ट पहचान संख्या होती है, जिसे किसी भी सीरियल प्रकाशन को आवंटित किया जाता है। इसका स्वरूप सामान्यतः "XXXX-XXXX" होता है, जिसमें प्रत्येक अंक का विशेष महत्व होता है। अंतिम अंक को "Check Digit" कहा जाता है, जो एक गणितीय एल्गोरिथ्म के आधार पर निर्धारित किया जाता है और यह सुनिश्चित करता है कि ISSN संख्या सही और वैध है। यदि गणना के अनुसार अंतिम अंक 10 आता है, तो उसे "X" के रूप में दर्शाया जाता है, जो ISSN प्रणाली की एक विशेषता है।

ISSN की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह प्रकाशन के शीर्षक (Title) से जुड़ा होता है, न कि उसके प्रकाशक, स्थान या संपादक से। इसका अर्थ यह है कि यदि किसी जर्नल का नाम बदलता है, तो उसे नया ISSN प्राप्त करना अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त, यदि किसी प्रकाशन का प्रिंट और ऑनलाइन दोनों संस्करण हैं, तो दोनों के लिए अलग-अलग ISSN प्रदान किए जाते हैं, जिससे प्रत्येक संस्करण की स्वतंत्र पहचान बनी रहती है। इस प्रकार ISSN प्रणाली प्रकाशनों के वर्गीकरण और प्रबंधन को अत्यंत सरल और व्यवस्थित बनाती है।

वैश्विक ISSN नेटवर्क और भारत की भूमिका

ISSN प्रणाली एक अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क के अंतर्गत संचालित होती है, जिसका मुख्यालय पेरिस (फ्रांस) में स्थित ISSN International Centre है। यह केंद्र विश्वभर के राष्ट्रीय ISSN केंद्रों के साथ समन्वय स्थापित करता है और एक वैश्विक डेटाबेस का संचालन करता है, जिसमें सभी पंजीकृत प्रकाशनों का रिकॉर्ड सुरक्षित रखा जाता है। वर्तमान में 90 से अधिक देशों में ISSN के राष्ट्रीय केंद्र स्थापित हैं, जो अपने-अपने देशों में प्रकाशित होने वाले सीरियल्स को ISSN प्रदान करते हैं।

भारत में ISSN प्रदान करने की जिम्मेदारी **ISSN National Centre of India** के पास है, जो **National

Science Library, NIScPR (New Delhi)** के अंतर्गत कार्य करता है। यह संस्था भारत सरकार के अधीन एक अधिकृत निकाय है, जो 1986 से लगातार प्रकाशनों को ISSN प्रदान कर रही है। यह न केवल ISSN आवंटित करती है, बल्कि भारतीय प्रकाशनों को अंतरराष्ट्रीय डेटाबेस में दर्ज कर वैश्विक स्तर पर उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करती है। इस प्रक्रिया से भारतीय जर्नल्स को अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिलती है और वे वैश्विक शोध एवं ज्ञान नेटवर्क का हिस्सा बन जाते हैं।

ISSN के लिए पात्र प्रकाशन और उसकी आवश्यकताएँ

ISSN केवल उन प्रकाशनों को प्रदान किया जाता है, जो नियमित अंतराल पर प्रकाशित होते हैं और जिनकी एक निरंतरता (Continuity) होती है। इसमें समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, शोध जर्नल्स, ई-जर्नल्स, न्यूज़लेटर्स, वार्षिक रिपोर्ट्स आदि शामिल हैं। किसी भी प्रकाशन को ISSN प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि उसका एक स्पष्ट शीर्षक हो, प्रकाशन की आवृत्ति निर्धारित हो, और संपादकीय संरचना (Editorial Structure) मौजूद हो।

ऑनलाइन जर्नल्स के मामले में, एक सक्रिय वेबसाइट, प्रकाशित सामग्री के नमूने, और संपादकीय जानकारी आवश्यक होती है। यह सुनिश्चित किया जाता है कि प्रकाशन वास्तव में सक्रिय है और केवल औपचारिकता के लिए आवेदन नहीं किया गया है। ISSN केंद्र द्वारा सभी दस्तावेजों का सत्यापन किया जाता है, जिसके बाद ही ISSN आवंटित किया जाता है। इस प्रक्रिया से यह सुनिश्चित होता है कि केवल प्रमाणिक और सक्रिय प्रकाशनों को ही ISSN प्राप्त हो।

ISSN प्राप्त करने की प्रक्रिया: चरणबद्ध विवरण

ISSN प्राप्त करने की प्रक्रिया एक व्यवस्थित और पारदर्शी प्रक्रिया है, जिसमें कई चरण शामिल होते हैं। सबसे पहले प्रकाशक को ISSN National Centre की आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन करना होता है। इसके बाद आवश्यक दस्तावेज जैसे प्रकाशन का शीर्षक, संपादकीय विवरण, प्रकाशन की आवृत्ति, और यदि ऑनलाइन जर्नल है तो वेबसाइट लिंक प्रस्तुत करना होता है।

इसके पश्चात ISSN केंद्र द्वारा सभी दस्तावेजों की जांच और सत्यापन किया जाता है। यदि किसी प्रकार की कमी या त्रुटि पाई जाती है, तो प्रकाशक से सुधार के लिए संपर्क किया जाता है। सभी जानकारी सही पाए जाने पर ISSN नंबर जारी किया जाता है और प्रकाशन को आधिकारिक रूप से पंजीकृत कर लिया जाता है। यह प्रक्रिया पूरी तरह से निःशुल्क होती है और पारदर्शिता के साथ संचालित की जाती है।

ISSN का महत्व: पहचान से लेकर वैश्विक मान्यता तक

ISSN का महत्व बहुआयामी है और यह किसी भी प्रकाशन को कई स्तरों पर लाभ प्रदान करता है। सबसे पहले, यह प्रकाशन को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है, जिससे उसे अन्य प्रकाशनों से अलग किया जा सकता है। इसके अलावा, ISSN प्राप्त होने के बाद प्रकाशन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिलती है, जिससे उसकी विश्वसनीयता बढ़ती है।

ISSN जर्नल्स को विभिन्न लाइब्रेरी, डेटाबेस और इंडेक्सिंग प्लेटफॉर्म में शामिल किया जा सकता है, जिससे उनकी पहुँच बढ़ती है। यह शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों के लिए एक प्रमाणिक स्रोत के रूप में कार्य करता है। इसके अलावा, यह प्रकाशन को एक पेशेवर स्वरूप प्रदान करता है और उसे वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सक्षम बनाता है।

डिजिटल युग में ISSN की बढ़ती भूमिका

डिजिटल युग में ऑनलाइन प्रकाशनों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, जिससे उनकी पहचान और विश्वसनीयता सुनिश्चित करना और भी महत्वपूर्ण हो गया है। ISSN इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह डिजिटल कंटेंट को एक प्रमाणिक पहचान प्रदान करता है। ऑनलाइन जर्नल्स के लिए ISSN सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन (SEO) में भी सहायक होता है और उन्हें अकादमिक प्लेटफॉर्म पर बेहतर दृश्यता प्रदान करता है।

इसके अलावा, ISSN के माध्यम से डिजिटल प्रकाशनों को अंतरराष्ट्रीय पाठकों तक पहुँचने में भी सहायता मिलती है। यह विशेष रूप से उन प्रकाशनों के लिए महत्वपूर्ण है, जो वैश्विक स्तर पर अपनी उपस्थिति बनाना चाहते हैं।

प्रेस काउंसिल ऑफ महाराष्ट्र का उदाहरण

Information of Press Council of Maharashtra"** एक ऑनलाइन ई-जर्नल है, जिसे **ISSN No. 3139-499X** प्रदान किया गया है। यह जर्नल वर्ष 2019 से निरंतर प्रकाशित हो रहा है और पत्रकारिता, मीडिया नैतिकता, जनहित तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर केंद्रित है।

इस जर्नल का ISSN पंजीकरण यह दर्शाता है कि यह प्रकाशन अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप है और एक विश्वसनीय एवं प्रमाणित मंच के रूप में स्थापित हो चुका है। यह उपलब्धि न केवल इसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाती है, बल्कि इसके पाठकों और शोधकर्ताओं के बीच विश्वास को भी सुदृढ़ करती है।

निष्कर्ष: पहचान से प्रतिष्ठा तक का सफर

अंततः, ISSN किसी भी प्रकाशन के लिए केवल एक संख्या नहीं, बल्कि उसकी पहचान, विश्वसनीयता और वैश्विक उपस्थिति का प्रतीक है। यह प्रणाली प्रकाशनों को एक संरचित और मानकीकृत पहचान प्रदान करती है, जिससे वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त कर सकते हैं।
आज के प्रतिस्पर्धात्मक और डिजिटल युग में, जहाँ सूचना का प्रवाह अत्यधिक तेज़ है, ISSN यह सुनिश्चित करता है कि केवल प्रमाणिक और विश्वसनीय प्रकाशन ही वैश्विक मंच तक पहुँच सकें। इसलिए प्रत्येक प्रकाशक के लिए ISSN प्राप्त करना एक महत्वपूर्ण और आवश्यक कदम है, जो उसे पेशेवर, प्रमाणित और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करता है।

 Keywords
ISSN, अंतरराष्ट्रीय मानक क्रमांक, सीरियल प्रकाशन, डिजिटल जर्नल, मीडिया विश्वसनीयता, प्रकाशन पहचान, ऑनलाइन मैगज़ीन, अकादमिक प्रकाशन, इंडेक्सिंग, सूचना प्रबंधन, शोध पत्रिका, मीडिया नैतिकता

© 2026 Press Council of Maharashtra. All rights reserved. | Information of Press Council of Maharashtra, Vol. 1 | Issue 3
Downloaded: 01 Nov 2026, 3:21 PM IST